श्री सुविधिनाथ भगवान का मंदिर, अणुनगरी रावतभाटा

यह शिखारबंद नूतन मंदिर निर्माणाधीन है। चित्तौड़गढ़ से 125 किलोमीटर दूर है। पूर्व में शहर के बाजार नं.2 में स्थापित यति जी का 50 वर्ष प्राचीन मंदिर में स्थापित आदिनाथ भगवान की प्रतिमा भी अणुनगर लाई गई। यह खरतरगच्छीय मंदिर है।

मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :

1. श्री सुविधिनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 23'' ऊँची प्रतिमा है।
2. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है।
3. श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है।

इन तीनों प्रतिमाओं पर वि.सं. 2059 फाल्गुण सुदि 7 का लेख है।

नीचे की वेदी पर श्री आदिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 7'' ऊँची प्रतिमा है। कोई लेख नहीं है।

उत्थापित चल प्रतिमाएँ व यंत्र धातु की :

1. श्री जिनेश्वर भगवान की 7'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।
2. श्री सुमतिनाथ भगवान की 7'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर संवत् 1529 आषाढ सुदि 2 का लेख है।

3. श्री चन्द्रप्रभ भगवान की 6.5'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर संवत् 1510 का लेख है।
4. श्री पार्श्वनाथ भगवान की 3.5'' ऊँची प्रतिमा है।
5. श्री शांतिनाथ भगवान की 3.5'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1699 का लेख है।
6. बीस स्थानक यंत्र गोलाकार 10'' का है। कोई लेख नहीं है।
7. श्री सिद्धचक्र यंत्र 4.5'' का गोलाकार है। कोई लेख नहीं है।
8. श्री सिद्धचक्र यंत्र 4.5'' का गोलाकार है। कोई लेख नहीं है।
9. श्री अष्टमंगल यंत्र 6'' x 3.5'' का है।

बाहर की ओर :

1. श्री अजित यक्ष की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2059 का लेख है।
2. श्री सुतरका यक्षिणी की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2059 का लेख है।

निम्न प्रतिमाएँ जो एक कमरे में अस्थाई रूप से विराजित हैं, उन्हें स्थायी स्थान पर विराजमान की जावेगी।

1. श्री जिनकुशल सूरि की श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है।
2. श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।
3. श्री घंटाकर्ण महावीर की श्वेत पाषाण की 21'' ऊँची प्रतिमा है।
4. श्री अम्बिका देवी की श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है।

इन सभी प्रतिमाओं पर संवत् 2059 का लेख है। तीन मंगलमूर्तिएँ भी हैं।

वार्षिक ध्वजा फाल्गुण शुक्ला 7 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख श्री जैन श्वेताम्बर श्री संघ , अणुनगरी रावतभाटा द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र – श्री कमलेश जी गिलानी , मोबाइल : 9414940062
श्री अशोक जी लोढ़ा, मोबाइल : 9413317573
श्री दिनेश वराड़िया, फोन : 01475-233425

श्री केसरियानाथ भगवान का मंदिर, भैसरोड़गढ़

यह पाटबन्द मंदिर चित्तौड़ से 75 किलोमीटर दूर है। कहा जाता है कि यह मंदिर 350 वर्ष प्राचीन है और यतिजी श्री कृष्णकान्त सौभाग्य का मंदिर कहलाता है। वर्तमान में भी मंदिर में यति परिवार ही रहता है और इसी परिवार द्वारा देखरेख की जाती है। यह नगर प्रथम श्रेणी का ठिकाना रहा है। मेवाड़ शासक ने कृष्णावत वंश को जागीरी सुपुर्द की व पाग के बंद मानशाही रही है। यह एक निजी व घर मंदिर है।

मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं :

1. श्री केसरियानाथ भगवान की (मूलनायक) मटिया (स्थानीय) पाषाण की 19'' ऊँची **प्राचीन** प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।
2. श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्याम पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 1768 फाल्गुण सुदि 2 का लेख है।
3. श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर भुवनभानु सूरीश्वर का लेख है।

उत्थापित चल प्रतिमाएँ व यंत्र धातु की :

1. श्री शांतिनाथ भगवान की 9'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर वीर सं. 2511 पोष वदि 6 का लेख है।

2–4 श्री जिनेश्वर भगवान की 3.5'', 1.5'', 1.5'' ऊँची प्रतिमाएँ हैं।

5. श्री जिनेश्वर भगवान की 3.5'' ऊँची चतुर्विंशति प्रतिमा है। इस पर सं. 1296 माघ सुदि 6 का लेख है।
6. श्री पार्श्वनाथ भगवान की 3.7'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर मूल संघ का लेख है।
7. श्री पार्श्वनाथ भगवान की 3.5'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 1656 का लेख है।

8–9 श्री पार्श्वनाथ भगवान की 3.5'' (मय स्टेण्ड) व 1.7'' ऊँची प्रतिमा है।

10. श्री पार्श्वनाथ भगवान की 4.5'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1618 मूल संघ का लेख हैं।
11. श्री आदिनाथ भगवान की 7'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1506 ज्येष्ठ सुदि 4 का लेख है।
12. श्री आदिनाथ भगवान की 6'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर संवत् 1524 वैशाख सुदि 5 का लेख है।
13. श्री शांतिनाथ भगवान की 6'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1469 का लेख है।
14. श्री अजितनाथ भगवान की 7'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1572 फाल्गुण सुदि 8 का लेख है।
15. श्री श्रेयांसनाथ भगवान की 7'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1525 माघ वदि 6 का लेख है।
16. श्री शासन देव चैत्यालय का ताम्बे का यंत्र गोलाकार 7'' का है।
17. श्री सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 4.5'' का है। इस पर वीर सं. 2511 का लेख है।

18–19 श्री अष्टमंगल यंत्र 6'' x 3.5'' का है। इस पर वीर सं. 2511 पोष वदि 6 का लेख है।

मंदिर के बाहर भाग के एक आलिए में श्री माणिभद्र जी 24'' ऊँची प्रतीक प्रतिमा है। इसी वर्ष सं. 2066 वैशाख सुदि 3 सोमवार को जीर्णोद्धार कराया गया है। **मंदिर की 11 बीघा जमीन है जो यति परिवार के पास है।**

वार्षिक ध्वजा वैशाख सुदि 3 को चढ़ाई जाती है।

समाज की ओर से देखरेख श्री मुकेश जी जैन द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र : श्रीमती उषा जैन, फोन 01475-232113, 97846 99312

श्री विमलनाथ भगवान का मंदिर, बस्सी (आम्बा)

यह शिखरबंद नूतन मंदिर जावद (म.प्र.) से 20 किलोमीटर दूर है, कहा जाता है कि इस ग्राम को बसे हुए करीब 350 वर्ष हुए हैं, तब ये एक कच्चे केलुपोश मकान में ऋषभदेव भगवान की प्रतिमा विराजित थी, उसका जिर्णोद्धार करा नूतन मंदिर का निर्माण कराया। प्रतिष्ठा सं. 2065 पोष वदि 2 को पद्मभूषण विजयजी व श्री निपुणरत्न जी की निश्रा में सम्पन्न हुई।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं :

1. श्री विमलनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है।
2. श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इन पर कोई लेख नहीं है।
3. श्री महावीर भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है। नीचे वेदी पर श्याम पाषाण की श्री ऋषभदेव भगवान की श्याम पाषाण की 5'' ऊँची श्री पार्श्वनाथ भगवान की 1.7'' व महावीर भगवान की 2'' ऊँची प्रतिमा है।

इन तीनों प्रतिमाओं को यहाँ विराजित कराई जो 400 वर्ष प्राचीन बताई जाती है। वेदी की दीवार के बीच प्रासाद देवी की श्वेत पाषाण की 5'' ऊँची प्रतिमा है।

बाहर सभा मण्डप में :

श्री गौतम स्वामी की श्वेत पाषाण की 7'' ऊँची प्रतिमा है। मंदिर की 1.75 बीघा कृषि भूमि है। यहां एक ही परिवार निवास करता है, वही पूजा व देखरेख करता है।

वार्षिक ध्वजा पौष वदि 2 को चढ़ाई जावेगी।

समाज की ओर से सम्पर्क सूत्र : श्री कन्हैयालालजी गोखरू,
फोन 01475-211649, मो. 9351463794

यदि मतभेद हो जाए तो वहाँ अपने शब्द वापस खींच लें, यह समझदार पुरुषों की निशानी है।